

✓

स्यमन्त-हरण यात्रा

(देव्यारि ठाकुर)

श्री कृष्णाय नमः

श्लोक

नमः कृष्ण विष्णोऽन्युत्तानन्त-शक्ते,
नमो रामराजीवनेत्र प्रभो हे ।
नमो ब्रह्ममूर्ते मुरारे परेश,
नमो विश्ववास प्रसीद प्रसीद ॥१॥

अपिच

राजेन्द्र पराक्रमं निर्जित्य ऋधम
मुदालीलया देवकीनन्दनो यः ।
प्रियं स्वमन्तकं जहार प्रियार्थम्
परेशाय कृष्णाय तस्मै नमो मे ॥२॥

नान्दी गीत

राग सुताइ । जोतिमान ।

मू०—जय-जय नन्द-नन्दन ।

तुझा पावे करहुँ वन्दन ॥

पद—जोहि ऋध जिनि जटुपति ।

मनि समे पाहला जाम्भ अति ॥

आपुनि कलंक करि दुर ।

मेला प्रभु अनिन्द प्रचुर ॥

माधवर पादपत्र जने ।

आलक देव्यारि प्रभु भने ॥३॥

नाट्यन्ते सूत्रधारः, अलमति विस्तारेण । प्रथमे श्रीकृष्णं नरवा सभासदः प्रत्याह ।

श्लोक

भो भो सभातदः साधु शृणुष्वं अद्वयाधुना ।
स्वमन्तहरणं नाम नाटकं मुक्तिदायकम् ॥४॥

अथ भट्टिमा

जय जय परम, पुरुष परमानन्द, नन्दनन्दन वन चारि ।
जय भक्त भव, मंजन गोविन्द, आनन्द विपिन विहारी ॥
अध्वक केसि धेतुक पुतना, मास्लमारि कंलघालि ।
काल्खि निकालि, संलचूर मारि, गोविजन प्रतिपालि ॥
सत्राजित बाद, कलंक सुनिने क्षुक्षपति रने जिनि ।
आपुन कलंक, दूर करि प्रभु स्वमन्तक दिखि आनि ॥
जान्दवति सत्य-भमाक विशाह, कयलि दर्प प्रचुर ।
जोहि भगवंत कृष्ण कृषामय, धाता सकल सुरासुर ॥
ब्रह्मा संकर लक्ष्मी जाकर चरणेहि करे निते सेवा ।
तुमुवनकारण, तारत सवल जो हरि देवक देवा ॥
भूमिकभार, उतारल तारल, नर रूप धरि अविराम ।
सुन साधुजन, हुया सावधान कृष्णक गुन अनुपाम ॥
सोहि महेश्वर, कृष्णक नाटक, स्वमन्त हरण आहे नाम ।
सुन सभासद खन्दोक आपद, डाकि बोलहु राम राम ॥५॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, जे सुरासुर वन्दित पादपद्म, परम पुरुष पुरुषोत्तम,
जोहि नारायण, कलि मखिन मनुष्य-निस्तार कारणे, देवकित हन्ते, वेकल
भेल, सोहि श्रीकृष्ण, जोहि सभामध्ये, प्रवेश कएकडूँ, स्वमन्त हरण लीला
जात्रा, परम कौतुके करल, ताहे देखह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल, इति
शास्त्रा सर्वे सावधाने स्वीयताम् ।

पुन सूत्रधार—(आकाशे कर्ण दत्वा) आहे संगि, क्री वाच सुनिवे ?

संगि—आहे संगि सखि, देव-दुन्दुभि वाजत, आहे देव-दुन्दुभि वाजत । आ श्रीकृष्ण
प्रिया रुक्मिणि सहिते मिलल मिलल ।

श्लोक

प्रवेशातकरोद्दो रूक्मिण्या सह केशवः ।
लीलागतिर्लोकान्तिः श्रीकन्ताः वामकोटिजित् ॥६॥

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, इतु जाहेरि कथा कहेलि सोहि श्रीकृष्ण प्रिया रुक्मिणि
सहिते, जोहि सभा मध्ये, प्रवेश कये, ए आवत ए आवत ।
इति सूत्रः निष्कान्तः ।

गीत

राम सिंधुरा । एक तालि ।
कौतुके कये प्रवेशि चतुर्भुजि ।
संगे चलल सखि सभे रुक्मिणि ॥

पद—कण्ठे कौस्तुभमनि कर परकास ।
स्वामल अंगे सोमित पीतवास ॥
चरणक रंजि मंजिर कर रोल ।
ताहे मज्जोक मन देवारि बोल ॥७॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, ऐचन प्रवेश कर, श्रीकृष्ण प्रिया रुक्मिणि सहित, एक
पाल हुवा रहल । तदन्तरे राजा सत्राजितक प्रवेश सुनह ।

श्लोक

सत्राजितः समोभावाः सूर्य आराधनस्तथा ।
स्वमन्तमणिप्रीवश्ल समामध्ये उपस्थितः ॥८॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, सत्राजित प्रवेश कये आवत, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे
हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम कानडा । परिताळ ।
आवे सत्राजित तप करिते ।
सूर्य आराधिते एकान्त चिते ॥

पद—हाते गले सिरे वद्राक्ष जोताजोत ।
कान्धे उतरि नव चराचर फोट ॥
भोवकार दाहि गोंक जटा सोहे माथे ।
दण्डकमण्डलु धरिए दुनो हाते ॥
गाथे वाघछाल उदक न्हाइ ।
एक पदे थिक सूर्यक थियाइ ॥६॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक ऐचन प्रवेश कये, सत्राजित सूर्यक आराधन करिते रहल ।

श्लोक

सूर्याश्च परमदुष्टः सत्राजित समीपगः
मणिसमो महाबाहु सनामध्वे उपस्थितः ॥१०॥

सूत्र०—तदनन्तरे सूर्य, सत्राजितक भक्ति देखिए, परम सन्तोष हुआ, जैसे सत्राजितक समीप आवल, ताहे देखइ सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम आसोआरि । परिताल ।
आचत दिनकर रथे चङ्गिया रे ।
देव सिद्ध सब चले बेरिआरे ॥

पद—गौरांग अंग रक्त वस्त्र गावे ।
दिस प्रकासित जाहे प्रभावे ॥
हाते सरधुन धरि करे हास ।
माथे श्येत छत्र कच परकास ॥११॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, सूर्य आसि कहूँ सत्राजितक तप देखिये बोलल ।

सूर्य—अये सत्राजित, हामु तोहारि भक्तित परम सन्तुष्ट भेलु, तोहाक हामु प्रसाद देहु । ओहि स्वमन्त मनि लया जाय ।

सूत्र०—ओहि हुलि, सूर्य सत्राजित हाते मनि दिए, मनिर महिमा कहिते लागल ।

तदनन्तरे, सूर्य सत्राजितक मनि दिए, आपुन धाने चलल । सत्राजित मनि पावा, महा भक्ति कए द्वारकापुरे आपुन गृहे जेचे चलल ।

सोहि समये द्वारकार प्रजासब सत्राजितक नाजानि, आदित्य आवल हुलि, मये सत्राजित हुथा, लवरि श्रीकृष्णत जान देलह ।

प्रजासब—हे परम ईश्वर, तोहारि चरने कोटि कोटि प्रनाम करहुँ, तुहुँ देवक परम देवता, मनुष्य-चेष्टा देखाइए, गुप्त स्वरुपे थिक । देखु तोहाक देखिते, सूर्य देवता आवल ।

सूत्र०—प्रजासबक जानि मुनिए श्रीकृष्ण अल्प हास्य कय, जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अये द्वारकावासि प्रजासब, ओहि सूर्य तुहि । सूर्यक आराधिये, सत्राजित स्वमन्त मनि पावल, सोहि मनिर रश्मिए प्रकासित हुआ, सत्राजित निज गृहे आवत । तोहा सब भय नाहि करवि ।

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, ताहे सुनि प्रजासब आनन्दे कृष्णक प्रनामि, निज धाने गेलह । इ कथा रहोक । अनन्तरे सत्राजित, निज गृहे आवल, देवक मन्दिरे मनि थापित कयल । तदनन्तरे विप्रक आनि मनि पूजिते लागल । ताहे देखइ सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम कानड़ा ।

हाते मनि लया विप्र चले धिरे धिरे ।
सत्राजित चले हासि देवक मन्दिरे ॥

पद—नाना भक्तिभावे निया मानिक थापिला ।
सत्राजिते पङ्क्ति धरे अङ्गणे नमिला ॥
हरि भक्ति एहि यिहो आन सेवाकरे ।
बोला हरि हरि सभासद निरन्तरे ॥१२॥

सत्राजित—अये प्रजासब, ओहि मनि महिमा कि कहय ? अ, स्वमन्त मनि जथात थाकये, तथात मारि नरकत, सर्प अग्नि आदि विचिन ना पावय, प्रति दिने सुवर्ण अष्टभार सवय । ओहि मनि देवत उत्तम ।

सू०—ओहि वृत्ति सत्राजित, देवछत्रे मनि पूजिये, आनन्दे रहल । अनेक दिन मनि पूजि विस्तार सुवर्ग पावल । धनगर्वे अर्थ दुआ, महत्त्वक मनये नाहि । इ कथा रहोक । आहे सामाजिक लोक, श्रीकृष्ण उद्धव सात्यकि समे, सुधर्मा सभाक चलल, ताहे देखह मुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग तुर भाटियालि । नोतिमान ॥
चलये गोविन्द, सुधर्मा सभाये,
उद्धव सात्यकि संगे ।
जय जय रव मिले महोत्सव,
हारका पुरि भरि रंगे ।

पद—ताल करताल मुरंग कोलाहल ।
संख हुनुमि रोले ।
छत्र ध्वज दंड छिरल चामर ।
धने बहुविध लोले ।
ह्वेत चामर धुलाद हुद पासे ।
भक्ति भावे भक्त अने ।
जय जय बोल करे धने धन ।
शालक देव्यारि भने ॥१३॥

सू०—आहे सामाजिक लोक, ओहि प्रकारे उद्धव सात्यकि समे, श्रीकृष्ण सुधर्मा सभात प्रवेशल । कोटि ब्रह्माण्डक रूपे चमत्कार लागाय, जहुधीर सब सहिते, तथि रहल । ओहि समये ओहि सभा मध्ये सत्राजित गेलाह । श्रीकृष्ण अल्पहास्य करिण, सत्राजितक जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अवे सत्राजित, तोहाक हासु एक वचन बोलोहो, ता मुनह । तुहुँ सर्वक आराधिण स्वमन्तक मनि पावलि, से मनित हन्ते तोहारि लागे माने अर्थ भेल । एवे मनित प्रवोजन नाहि, ओहि देवक मनि, तुहु मनुष्य अल्पचित्त । से मनित हन्ते काले बहु दुख पावव, ओहि मनि राजा उग्रसेनक देह ।

सू०—ताहे मुनिण, सत्राजित परम क्रोधमने कृष्णक ना माति, आपुन चहुँ खलिण गेल । तदनन्तरे सत्राजितर कनिष्ठ भाइ, ताहार नाम प्रसन्न, से घोडात चढ़ि, कण्ठत स्वमन्तक मनि पिन्धि, जेचे मृग मारिते विजुवने चलल, ताहे देखह मुनह, निरन्तरे हरि बोळ हरि बोळ ।

पयाड गीत

राग कानड़ा । परिताल ।

कण्ठत मनि पिन्धि प्रसन्न वीर ।
घोडात चढ़ि धरि भटु तीर ॥

पद—पसुक मारि फुटे अने अने ।
मृग आवि आगे मैल उपसने ॥
सधने दिस पात उर्दक चाह ।
कोमल दून आचि आचि खाह ॥
घोटक सहिते देखि प्रसेन ।
पलाह मृग गोद विद्युत जेन ॥
पाछे पाछे खेदे प्रसन्न वीर ।
सिंघक आगे प्राप्ति भेल धरि ॥
पोटक सहिते मारि प्रसन्न ।
कण्ठर छिण्डि लेला स्वमन्त ॥
विरत पिन्धि रंग करि सिंघ ।
चढ़िल गया पर्वत सिंघ ॥
देखि जाम्बवन्त वीर ब्रिताल ।
सिंघक धाया गेल ततकाल ॥
दुपौर जुभ सिंघ समे कैल ।
सिंघक मारि स्वमन्तक निल ॥
चाछे जाम्बवन्त गर्त पसिल ।
उमल्लिने लागि विसुक दिल ॥१४॥

सूत्र०—पेचन प्रकारे प्रसन्न मृग मारिते, बिजु जने प्रवेशल, सोहि वन मध्ये, सिंधे पाद, प्रसन्नक मारि कहु, मनि निआ गेल । अनन्तरे श्रुक्षराज जाम्बवन्त, सिंहक मारि, मनि निया, सुकुमार नाम कुमारक उमलाइते, ललिता नामे धाहर हाते देलह । हाते मानि लया, धाह सिंधु उमलाइते लागल । इ कथा रहोक । आहे सामाजिक लोक, तदनन्तरे पर दित सत्राजित, भाइ नागिवार देखिये, कान्दि कान्दि प्रजासन्नक बुलिते लागल ।

सत्राजित—हा हा प्रान भाइ, स्वमन्तक मनि विन्धि मृग मारिते गेलि, स्वमन्त मनि सर्व विचिन नासक, से मनि रहैछे, एकोवे संका नाहि, किन्तु श्रीकृष्ण पूर्वे, राजाक मनि दिते कहल । राम नहि देलहुँ, देखो ताहेक निमित्त कृष्ण हामारि भानुक मारल, हा हा भैवाइ, मनिर निमित्त तोहाक हरु आइलु । पूर्वे जानु कृष्णर निमित्त, भाल वस्तु राखिते पारये नाहि । कृष्णक समान दुर्जन नाहि, अवस्ये भाइक मारि मनि लेलह ।

सूत्र०—ओहि बुलि, सत्राजित जेचे ^{बिजाप} विमल कयल, ताहे देलह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग गीरी । विषमताल ।

कान्दे सत्राजित, सोके आकुलित,
नवनक नीर वहि जाइ ।
ग्रह सूर्य करि, मोक परिहरि,
कोइक गइलि प्रान भाइ ॥

पद—दुष्ट जदुराह, खुजिया न पाइ, भाइक मारि निला मनि ॥
बैकत न कहे माधवक डरे, लोके करे कानाकानि ॥
हरि हरि भाइ, तोहोक न पाइ, सोके दहे मोर गाव ॥
दीन शीन कहय देवारि, प्रनाभि माधव पाव ॥१५॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, वेजु देखु विष्णु वैष्णवक, अबहेला करिते, अतये विचिन मिलल, प्रमान सत्राजितक देखह, जानि विष्णु वैष्णवक चिन्ति, हरि बोल हरि बोल ।

सूत्र०—पेचन परकारे, सत्राजित तथि रहल । ताहें बचन सुनिए, सब लोक बुलिते लागल, श्रीकृष्ण प्रसेनक मारि मनि लेया गेल । सत्राजितर पेचन कथा कळक सुनिए, श्रीकृष्ण विस्मय हुवा जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—आः हानु मिछात कळक वावलु, अब हानु आपुन कळक, आपुने दूर करव ।

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, ओहि बोलि श्रीकृष्ण, भाल नगरिया-लोक संग लया, प्रसन्न घोडाक खोज चाहिते, जेचे अरन्ये चलल, ता देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

पथाइ

राग श्री ।

प्रसन्नर पन्थे खलि जान्ते दामोदर ।
प्रवन्थे निहाल सिटो खोज घोडकर ॥
घोडा सने प्रसन्न पडिया आछे तय ।
सिंधे मारि मन निला जानिलो निरचय ॥
देखिया चिस्मय भेला सर्वलोक जन ।
मिछात कळक पाइला देखकि तन्दन ॥
एहि कुलि लोक सिंध खोज गुरि जाइ ।
देले सिंध पडि आछे दास निकटाइ ॥
भाळके निलेक मनि मारिआ सिंधक ।
खोज गुरि भाळकर पाइलेक गर्तक ॥
कश्य देवारि दासे एडा आन काम ।
पातेक छाडोक डाकि बोला राम राम ॥१६॥

सूत्र०—भयंकर गर्त देखिए श्रीकृष्ण जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अये नगरिवासव, तोरासव एथा हमाक अपेक्षि रह, हामु गर्त पसिए मनि आनो गिवा ।

सूत्र०—ओहि बोळि श्रीकृष्ण, मनिक निमित्तो गर्ते पयल ।

पुनु गीत

देखि सब सेनागन बाधिरत गेइ ।
एकल चरे गर्ते कृष्ण प्रवेशिला गेइ ॥
तथाए देखिला कृष्णे मनि स्वमन्तक ।
हाते लेया भाइ उमलावे बालेकक ॥
मनि काट्टि लेवे मने प्रथु दामोदर ।
चापिलेक गेवा सिटो धाहर ओचर ॥१७॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण, गर्त र भितरे पसिये देखल, एक भाइ स्वमन्त मनि लवा, सिमु उमलाइते आछथ । श्रीकृष्ण पीतवस्त्र कटित काठि, काट्टि लेवाक प्रति, जेचे मनिर कारवर चापल, देखि भाइ भये आर्त्त राखे जे बोलल ।

भाइ—अये रिश्वराज, कोथेर मनिछ गोटे, मनि काट्टि लया जाइ । तुहुँ सवरे आव, सवरे आव ।

पुनु गीत

कोथेर मनिछ गोटे मनि नेइ काट्टि ।
एहि बुलि भये भाइ दिला दीर्घ गेरि ॥
मुनि जाम्बवन्त तेतिखने भेला वाज ।
झाकि राम राम बोला समस्ते समाज ॥१८॥

सूत्र०—धाहर आर्त्त राव मुनिए, जाम्बवन्त खेदि आसि, जेचे जम सम हुआ, बुद्ध कअल, ताहे देखइ सुनह, निरन्तरे हरि बोल, हरि बोल ।

गीत

राज सारंग । परिताल ।
मनि नेइ मुनि जाम्बवन्त वीर ।
आइला भाइ कोपे कपयाया सरीर ॥

पर—देखिया कृष्णक जलिला कोप ।
लगाइला बुद्ध करिया आटोप ॥
कता दृश सिला माथात हाते ।
मुण्डक मुण्डे ठेका मारे टाने ॥
वाहुवे वाहुवे माल बान्धे बरि ।
मरिक भरि छन्दि थाके खने परि ॥
बान्धर चोटे भांने हार धार ।
आक्रान्तत बुद्ध करे कोलाइल ॥
एडिया कतहो हन्त अन्तर ।
दोरधोर बुद्ध स्वामि किंकर ॥
कोथे चल पकाइ सघने चान्त ।
तर्जय सज्जय कामुरिया दान्त ॥
कृष्णर प्रहारे जाम्बवन्त राह ।
भेला शान्त आर चेतन नाइ ॥१९॥

सूत्र०—आइ सनाजिक लोक, कुण्ठर प्रहार पाइ जाम्बवन्त थीर मृतक स्वभावे पडल, कतो धने स्वस्थ होइ, कृष्णक परम ईश्वर जानि, तुति करिते लागल ।

जाम्बवन्तर तुति ।

पयार ।

जय जय राम भुवन ईश्वर ।
ब्रह्मा संकर जादेरि किंकर ॥
सकल जगत तुहुँ अधिकारि ।
सुधारो लधा तुमि दुरारि ॥
तुहुँ नियन्ता जीव ईश्वर ।
नाहि आदि आन लोमात पर ॥
तुमि इष्टदेव मोर श्रीराम ।
तुवा पाये परि करहुँ प्रताम ॥

सेतु बान्धि तुष्टु सागर तरिखा ।
 रावन बधि सीता उद्धारिखा ॥
 तोम्भर आगे सीता जण्डाहल ।
 तोहाक प्रभु आवे जानिलो ॥
 जगत ईश्वर तुमि श्रीराम ।
 चरणे पङ्क्ति करहुँ प्रनाम ॥२०॥

कथा—हे परम ईश्वर, तुहुँ देवक देवता, तोहाक नजानि अहंकार कयल, मोहोर पाप मरख गोसाजि, किन्तु पुछोहौं, एहि धाने कि काजे आवलि ?

सूत्र०—ओहि बुलि जाम्बवन्त, कृष्णक परम ईश्वर जानि परि प्रनाम कयल, श्रीकृष्ण हाते धरि तोलि, बिचेष्टा हेन देखि, अमृत हाते ताहर सरीर मार्जल । कृष्ण परस पाइ जाम्बवन्त स्वस्थ भल । तदनन्तर तुष्टु हया, श्रीकृष्ण मेघ गम्भीर वचने जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे रिक्षराज, कृष्णे मनि निया गेल, बुलिवे सजाजित हामाक कलंक वाद देखल । स्वमन्त मनि निया, हामु कलंक दूर करव, ओहि कारणे तोहार धाने आवलु थिक । तुहुँ हामार परम भक्त, इहा जानि ओहि मनि हामाक देहु ।

सूत्र०—श्रीकृष्ण ऐचन वाक्य सुनिये, जाम्बवन्त परम आनन्दे, जाम्बवन्ति नामे आपन दुहिता रंगे कृष्णक विवाह देखल । स्वमन्त मनि लगे जीतक बेलह । श्रीकृष्ण जाम्बवन्तिक पाइ, परम आनन्दे द्वारकापुरि चलल । इकथा रहोक । आगे सामाजिक लोक, गर्तर बाहिरे कृष्णक आपेलि नतलोक रहैचे, वाढ़ दिन बाट चाइ आछप । श्रीकृष्ण ना सिवार देखिये, निवर्तिये गेवा द्वारकात जान देखल ।

नगरिया—अये बन्धु-जाम्बवन्त, श्रीकृष्ण अरुन्दे पसिये, प्रसन्नक विचारल, देखल बोझा समे प्रसन्नक मारि सिधे मनि निया गेल । तदनन्तर सिधक मारि भालुके मनि निना गेल । ताहे देखिए श्रीकृष्ण, खोन गरि गेया, भालुकर गर्त पावल, हामु सब वाढ़ दिन बाहिरे रहलु । कृष्ण नाबल । कृष्णर किवा आशन्तर मिलल, हामु सवे नाहि जानलु ।

सूत्र०—ऐचन विप्रिय आनि सुनि, बसुदेव-देवकी, उग्रसेन आदि द्वारकावासियन आर्तराजे क्रन्दन कय लागल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

रग कामोद । छूतिकाला ।

कान्हे देवकि सति, बसुदेव समनिति,
 लोके जेन जाइ प्राण फुटि ।
 फोकारण पनेषन, भैला तुह अचेतन,
 पृथिवित पङ्क्ति पारे लुटि ॥

पद—पुन पुन पारे लुटि, हृदयवत हाने मुटि,
 केक गेला वाप बसुमनि ।

मुख चन्द्र नोहे, सरि, कमल लोचन हरि,
 सोभे कोटि मनमथ जिनि ॥

कृष्ण आसन्तक बुलि देवत साधव वर,
 परि तुति करे एक मनै ।

महा मूढ़ मति हीन कश्य दैत्यारि दीन,
 गति मोर माधव चरणे ॥२१॥

सूत्र०—आगे सामाजिक लोक, पुनक बेनेह आकुलित हया, हा कृष्ण बुलि हिये मुटि हानि, देवकि जेछे बिलाप कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

रग शोलाआर ।

प्राणधन हरि हे गोविन्द छोते हले ।
 तोहाक ना देखि मोर लोके अङ्ग जले ॥

पद—पुन लोके मरि जाजि हिये मुटि हानि ।
 अचेतने परि रहे देवकि रमनि ॥

कहय देव्यारि सिधु अति अश्वमति ।

जनमे जनमे मोर कृष्णत भक्ति ॥२२॥

सूत्र०—ऐचन विलाप कये देवकि घने घने, निश्वाल फोकारिते रहल । तदनन्तर
रुक्मिनि स्वामिक निमित्त जे छे विलाप कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे
हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग माउर, दोमानि परिताल ।

विलपति रुक्मिनि माइ, मोर नयन मुराइ ।

घने घन निश्वाल फोकारे, ए तनु चेतन नाइ ॥

पद—कृष्णर चरणे देहा दहे, एक तावे मुदुलि कुमरि ।

कृष्णर चरण चिन्ति माइ, दिस देखु अम्बिधारि ॥

हा कृष्ण हा कृष्ण जगमे, ए मुठि हृदय हानि ।

कहय देव्यारि सिधुमति, राम ओलो सवे जानि ॥२३॥

सूत्र०—ऐछन क्रन्दन कए, रुक्मिनि घने घने निश्वाल फोकारि, कृष्णर चरण चिन्ति
रहल । तदनन्तरे वसुदेव देवकि जादवजन सहिते, देव आराधन कयल, कृष्ण
आसिधार प्रार्थना कयल । तारासवर मनोरथ सिद्धि भेल । श्रीकृष्ण
जाम्भवतिक आगे करिए, स्वमन्तक मनि पिन्धि, जेचे द्वारका चलल ताहे
देखह, सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग बेलोआर । रूपक ताल ।

चललि द्वारकापुरि प्रभु जहुपति ।

स्वमन्तक मनि लैया संगे जाम्भवति ॥

पद—चरणे मंजिर मनि रुनकुन बोले ।

हेरि मुदुति मोहन मनमथ बोले ॥

देखि जहुगन आनन्दर नाहि पार ।

कन्यागने पारे संगे उरलि जोकार ॥

पतुलि पतुलि दिव छत आलिपन ।

जय जय कृष्ण रावकरे घने घन ॥

कह देव्यारि दास पड़ा आन काम ।

कृष्णर चरण धरि ओला राम राम ॥२४॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, श्रीकृष्ण द्वारकापुरि प्रवेशल, जाम्भवतिक देखि वसुदेव देवकि,
रुक्मिनि आदि नारि सवर आनन्द मिलल । जहुगन जय कृष्ण जय कृष्ण
पुलि, आम वाडि आनल, श्रीकृष्ण उग्रसेन आदि जहुवीरगन सहित सुभर्मा
सपात बैठल, सत्राजितक तथा डाकिया आनावल, श्रीकृष्ण ताहेक जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अये सत्राजित, तोहारि भातु प्रसन्न, कण्ठे स्वमन्त मनि पिन्धि कहो, मुग
मारिते गेलह । अरन्यत लिबे पार, प्रसन्नक घोडा संगे मारि मनि लेलह ।
तदनन्तर सिधक मारि, जाम्भवन्त मनि निया गेल । जाम्भवन्त मनि
घाइक देलह । घाइ मनि लया सिधु उमलाहते रखे थिक, देखि हामु
मनि कादि लहदाक मने समीप पावल । हामाक देखिए घाइ आतंराव
कयल । ताहे सुनि जाम्भवन्त घाया आवल । अनन्तरे जाम्भवन्त सहिते,
हामु आठासदिवस सुद्ध कयल, स्वमन्त मनि हामु आनल । ओहि
नगरिया सबत प्रमान देखह । हे सत्राजित, तुहु मिछात हामाक कलंक
देखह, तोहारि स्वमन्त मनि ओहि लेहु ।

सूत्र०—ओहि बोलि श्रीकृष्ण, मनि सत्राजितर हाते देखह । सत्राजित मनि लया,
लाजे अपमाने आपुन एहे चलल, ताहे देखह सुनह निरन्तरे हरि बोल
हरि बोल ।

गीत

राग बसन्त । मान छुटा ।

हाते मनिलया मने गुने सत्राजित रे ।

कृष्णक कलंक दिलो मिछात पापिष्ठ रे ॥

पद—जावे जिये लोके मोक तु बुलिवे बाल ।

महन्त सकले मोक करिये भिवकार ॥

किमते एङ्गाशो मंचिण् लोकर ताप ।
 केनमते तुष्ट हन्त जगतर वाप ॥
 किमते कृष्णर मंचि रंजिवोहु चित्त ।
 जगत ईश्वर केन मते हेव तुष्ट ॥
 सत्यभामा कन्या मोर दिवोहो कृष्णक ।
 लगते जीतक मनि दिव स्वमन्तक ॥
 तेवेसे सन्तुष्ट मोत हेव दामोदर ।
 ने देखो उपाय मंचि आर आतपर ॥
 एहि बुलि कन्या मनि दिलाहा कृष्णक ।
 कहन्त देव्यारि दीन माधव सेवक ॥२५॥

सत्राजित—अये बन्धुवान्धवसव, हासु श्रीकृष्णक मिलति कलंक देलहुँ । हामाक सर्व-
 लोके मन्द बोलव, सोहि निमिते हामारि सत्यभामा नामे कन्या, श्रीकृष्णक
 विवाह देवबु, स्वमन्त मनि लगे जीतक देवबु । इहात परे आन उपाय
 नाहि, सवरे विवाहर सम्भार मिलाव ।

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, सत्राजित परम आनन्दे, सत्यभामाक कृष्णक संगे विवाह
 देलह, स्वमन्त मनि लगे जीतक देलह, आनो बहुत जीतक देलह, ताहे
 देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम सुवाह । जोतिमान ।

गोविन्द करतु विवाह हरये ।

सिद्ध मुनिगन कुलुम बरिषे ॥

पद—गर्गे होम दियत चुम्ब धरि ।

सर्वलोक बोले जय हरि ॥

संख भेरि सूदंग बनावे ।

रंगे गोविन्दर गुन गावे ॥

दिला नाना जीतक अपार ।

दूर्वाश्रत उदलि जोकार ॥२६॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, श्रीकृष्ण सत्यभामाक परम कौतुके विवाह करावल, स्वमन्त मनि
 लगे जीतक पावल । आये समाजिक लोक, श्रीकृष्ण रुषिमनि जाम्भवति
 सत्यभामा क लया रत्न मय मन्दिरे प्रवेशल, आनन्दे क्रीडा दृश्य कयल, ताहे
 देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम कैल्यान । खरमान ।

करत विशार मुरारि रंगे ।

गावे पीतपाल हास परिहास

भकता रमति संगे ।

पद—बहुनि जाम्भवति सुन्दरि सत्यभामा
 कण्ठे धरत वाहु मेलि ।

सधने कुचजुग नखधत सन्धाने
 करत लीला रस केलि ।

कुञ्चित चिहुर चिबुक चाह अक्षर
 कर चुम्बन वनमालि ।

कनक किंकिनि भ्रूणकित मंजिर,
 उरे मालतिमाला दोलि ॥

माधव देवक चरण नमिण्,

दीन देव्यारि पशु भये ॥२७॥

सूत्र०—ऐचन सत्य कये, श्रीकृष्ण प्रियाक आनन्द श्रद्धाये, थिक, ओहि स्वमन्त हरण
 नाटक सम्पूर्ण भेल । हे समाजिक लोक, ऐचन परकारे श्रीकृष्ण जीवक
 निस्तार हेतु अवतार हुवा, भक्तक राखत, दुष्टक दण्ड करत । ओहि स्वमन्त-
 हरण कथा, जारा सबे श्रद्धाये सुनव, जारा सकले श्रद्धाये गावव, तारा सवर
 कलंक दुख-बुर्गति पुर होवव, अनायासे संसार तरव, श्रीकृष्ण चरणे एकान्त
 भक्ति वादय, इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

अथ भटिमा

मुक्ति मंगल ।

जय जय देवकि नन्दन देव । ब्रह्मा हरे जाहे करे सेव ॥
 जोहि सकल भुवन अधिकारि । मुकुतिक देत सोहि श्रीहरि ॥
 जोहि अथ बक चानूर-पालि । वसुना हृदये दगल कालि ॥
 सोहि गोपाल गोबर्द्धनधारि । मुकुतिक देत सोहि मुरारि ॥
 कुमलय केशि कंसमालमारि । रितुक नाटुक बन्धन-छोरि ॥
 जोहि जतुकुल पालनकारि । मुकुति करतु सोहि मुरारि ॥
 जागवति सत्यभामाक विवाह । कयलि जोहि करि उछाह ॥
 सज्जन जत नियज-कारि । मुकुति करतु सोहि मुरारि ॥
 करतु अथ कवना जदुराह । लेलोहों सरन तोहारि पाह ॥
 मुखे जोनो छाड़ो तव नाम । मागो अतय भिक्षा तोहारि ठाम ॥
 कहय देवधारि दीन मतिहिन । भक्त विनति तोहारि चरण ॥
 कलिकुमे परम धर्म हरि नाम । जानि सब लोक बोलहु राम राम ॥२८॥

श्रीकृष्ण पादपद्मस्य प्रसादेन सुनिश्चितम् ।
 स्वमंतं हरनं नाम नाटकं पूर्णतान्तम् ॥

इति स्वमन्त हरण जात्रा समाप्त ।